www.jagran.com 03/10/2019 p-3 mg Dainik Jagran जागरण सिटी

आदि ग्रंथों का पर्यावरण संरक्षण से गहरा नाता : सत्यव्रत शास्त्री

बापू की 150वीं जयंती पर गांधी दृष्टि व पर्यावरण विमर्श विषयक परिसंवाद का आयोजन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर साहित्य अकादमी द्वारा एक दिवसीय परिसंवाद 'गांधी दृष्टि और पर्यावरण' विमर्श आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन संस्कृत के विद्वान व साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य सत्यव्रत शास्त्री ने किया। समाजसेवी व लेखक आबिद सुरती विशिष्ट अतिथि के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की तो अतिथियों का स्वागत सचिव के. श्रीनिवासराव ने गांधी माला और पुस्तकें भेंट करके किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में महाभारत, रामायण और संस्कृत के विभिन्न कालजयी ग्रंथों का उदाहरण देते हुए सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि हमारे सारे आदि ग्रंथ पर्यावरण संरक्षण की सीख देते हैं।

हमारे यहां पृथ्वी को माता और वृक्षों को देवता के रूप में पूजा जाता है, पंचतत्वों के साथ ही पशु-पक्षियों को पूरे मान-सम्मान के साथ सामाजिक व्यवहार

साहित्य अकादमी में गांधी दृष्टि व पर्यावरण विमर्श विषयक परिसंवाद में बोलते वक्ता

में शामिल किया गया है। स्वच्छता शब्द संस्कृत से बना है, जिसका अर्थ बहुत अच्छा है। आबिद सुरती ने उन व्यावहारिक मुश्किलों का जिक्र किया, जिसके चलते गांधी का पर्यावरण आदि के प्रति महत्वपूर्ण दृष्टिकोण अब भी सही रूप में आम जनता तक नहीं पहुंच सका है। उन्होंने कहा कि हम गांधी को केवल आजादी दिलाने वाले महापुरुष के रूप में ही याद करते रहे, जबकि उन्होंने आजादी के अनेक स्तरों पर कार्य किया था, जिससे हम अभी भी अंजान हैं। सत्र के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गांधी का जीवन ही संदेश था। उनकी कथनी और करनी में अंतर न होने के कारण उनके विचार पूरे विश्व में प्रचारित हुए।

परिसंवाद के दूसरे सत्र की अध्यक्षता पत्रकार बनवारी ने की और सुशील त्रिवेदी, उषा उपाध्याय, शंभू जोशी और अरुण तिवारी ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। उषा उपाध्याय ने पर्यावरण की वर्तमान समस्या का इतिहास प्रस्तुत करते हुए कहा कि गांधी प्रकृति के साथ स्वावलंबन का रिश्ता रखना चाहते थे न कि दोहन का।

शंभू जोशी ने कहा कि वर्तमान में हम आंतरिक उपनिवेशवाद के शिकार हैं और शहरीकरण हमें विनाश की ओर ले जा रहा है। अरुण तिवारी ने कहा कि गांधी वर्तमान विकास की दौड़ में कभी भी शामिल नहीं होते और उनका नजरिया हमेशा ग्राम विकास को प्राथमिकता देता। सुशील त्रिवेदी ने कहा कि हम गांधी की सादगी और संयम के विचारों के अनुगामी जब तक नहीं होंगे तब तक हमारे पर्यावरण का बच पाना मुश्किल है। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम में काफी संख्या में लेखक व छात्र उपस्थित रहे।